

रखते हुए नियमित अन्तराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

तुड़ाई एवं उपज

फलियों की तुड़ाई हमेशा मुलायम अवस्था में करनी चाहिए। देर से तुड़ाई करने पर फलियों में सख्त रेशे बन जाते हैं। जिससे इनका बाजार मूल्य घट जाता है। बौनी (झाड़ीनुमा) किस्मों में 3-4 तुड़ाई मिल जाती है। जबकि लता (पोल टाइप) किस्मों में लम्बे समय तक फलत मिलती रहती है। यदि फराश बीन की खेती सूखे दानों के लिए की गयी हो तो फलियों की तुड़ाई सूखी अवस्था में जब वे चिटकने के करीब हो करनी चाहिए।

फराश बीन की झाड़ीनुमा (बुश टाइप) किस्मों से हरी फलियों की उपज 60-80 कुन्तल व लता वाली (पोल टाइप) किस्मों की 80-100 कुन्तल प्रति हेक्टेयर होती है। सूखे दानों की औसत उपज 10-15 कुन्तल प्रति हेक्टेयर होती है।

तुड़ाई उपरान्त प्रबन्धन

हरी फलियों को तुड़ाई के पश्चात् ठंडे छायादार स्थानों पर रखना चाहिए। क्षतिग्रस्त, सड़ी-गली, कीड़ों मकोड़ों से प्रभावित व विकृति फलियों को छोटकर निकाल देते हैं। जूट के बैग में भरकर फलियों को यथाशीघ्र बाजार में विक्रय हेतु भेज देते हैं। फलियों को ताजा बनाये रखने के लिए बीच-बीच में पानी का छिड़काव कर सकते हैं। हरी मुलायम फलियों को 4-5 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान व 95 प्रतिशत सापेक्षित आर्द्रता पर 6-8 दिनों तक भण्डारित कर सकते हैं।

प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

तना छेदक कीट (स्टेम बोरर) : यह राजमा की फसल को नुकसान पहुँचाने वाला महत्वपूर्ण कीट है। इस कीट का मैगट क्षतिकारक होता है जो तने में छेद करके सुरंग बनाकर क्षति पहुँचाता है जिससे पौधे का ऊपरी भाग सूख जाता है। इस कीट का प्रकोप शुरू की अवस्था में ज्यादा होता है।

नियंत्रण: बुआई के समय इमिडाक्लोप्रिड 48 एफएस @ 5-9 मिली/किग्रा. बीज या इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यूएस @ 5-10 ग्राम/किग्रा. बीज या थायोमैथोक्जाम 70 डब्ल्यूएस 3-5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें। क्षतिग्रस्त तनों और शाखाओं को खेत से हटा देना चाहिए।

बीन बिटिल : इस कीट के प्रौढ़ व सूँड़ी दोनों पौधे के पत्तियों को खाकर क्षति पहुँचाते हैं।

नियंत्रण : इस कीट के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ई.सी. @ 15 मिली. या क्लोरपारीफॉस 20 ई.सी. मिली/किग्रा. या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. @ 0.5 या डाइमैथोएट 30 ई.सी. @ 2.5 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

कालर रॉट : इस रोग का प्रारम्भिक लक्षण पौधों पर पड़ता है जो मीन की अधिकता के कारण जमीन की सतह से प्रारम्भ होता है और सम्पूर्ण छाल सड़न से ढक जाती है। जिससे संक्रमित भाग पर सफेद फफूँद वृद्धि हो जाती है जो छोटे-छोटे टुकड़ों में बनकर धीरे-धीरे स्क्लेरोटिनिया में बदल जाती है। जो मिट्टी में जीवित रहते हैं और उपयुक्त वातावरण मिलने पर पुनः सक्रिय हो जाती है।

नियंत्रण : इस रोग के नियंत्रण के लिए बीजों का उपचार बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा 5 ग्राम/किग्रा. की दर से करनी चाहिए। बुआई के 20 दिन उपरान्त, ट्राईकोडर्मा के घोल से (10 ग्राम/लीटर पानी) जड़ों को तर करना चाहिए। त्वरित रोग नियंत्रण के लिए, संध्या के समय जड़ के समीप कॉपर आक्सीक्लोराईड 4 ग्राम/लीटर पानी की दर से जड़ों का तर करें।

रस्ट : यह फफूँद जनित रोग है जो पौधों के सभी ऊपरी भाग पर छोटे, हल्के उभरे हुए धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं तने पर साधारणतः लम्बे उभरे हुए धब्बे बनते हैं।

नियंत्रण : इस रोग के नियंत्रण के लिए खेत में औसतन दो धब्बे प्रति पत्तियों के दिखने पर, फफूँदनाशक जैसे-फ्लूसिलाजोल/ हेक्साकोनाजोल/ बीटरटेनॉल/ ट्राईआडीमेफॉन 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी का 5-7 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये।

स्क्लेरोटीना ब्लाइट : यह फफूँदजनित रोग है जो लोबिया की फसल को काफी हानि पहुँचाता है। प्रारम्भिक अवस्था में लक्षण सफेद होकर सड़ना, बाद में सड़े भाग पर फफूँद का बढ़ना व संक्रमित भाग एवं फलों एवं छिलके के अंदरूनी भाग में जालीनुमा स्क्लेरोटीना का सफेद माइसीलीयम (फफूँद) में परिवर्तित हो जाता है। संक्रमण प्रायः फूलों से शुरू होकर बाद में फलियों तक पहुँचता जाता है।

नियंत्रण : इस रोग के नियंत्रण के लिए पौधों में पुष्पधारण करने के साथ फफूँदनाशक जैसे कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम/लीटर पानी) एवं मैकोजेब (2.5 ग्राम या कार्बेन्डाजिम + मैकोजेब 1.5 ग्राम/लीटर पानी) के घोल का 7-10 दिन के अन्तराल पर क्रम से छिड़काव करना आवश्यक है।

विषाणु रोग (गोल्डेन मोजैक) : यह वायरस जनित रोग है। लक्षण में ऊपरी पत्तियों पर पीले एवं हरे रंग के धब्बे बनते हैं। बाद में अधिकांश पत्तियाँ पूर्णतया पीली पड़ जाती है। संक्रमित फलियाँ साधारण हरे रंग से पीली पड़ जाती है।

नियंत्रण : इसके नियंत्रण के लिए कार्बोपयूरॉन 3 जी. के 1.5 सक्रिय तत्व को प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाने के उपरान्त बुआई करनी चाहिए। इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली./लीटर या थायमैथोक्जोन 1 मि.ली./3 लीटर पानी के घोल का छिड़काव फूल लगने तक 15 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए।

बैक्टीरीयल ब्लाइट्स : यह जीवाणु जनित रोग है, जिसमें संक्रमित उत्तक पीले पड़ जाते हैं एवं मरने के उपरान्त विभिन्न आकार एवं नाप के उभार/धब्बे बनाते हैं। जो बाद में (वर्षा ऋतु) बड़े धब्बे के समान लक्षण पत्तियों पर दिखते हैं। वर्षा ऋतु में, फलियों पर भी छोटे धब्बे बनते हैं।

नियंत्रण : इस रोग के नियंत्रण के लिए बुआई के पूर्व बीजों को स्ट्रेप्टोसाइक्लीन घोल (100 पी.पी.एम की दर से) 30 मिनट के लिए डुबोने के उपरान्त बुआई करें। साफ, रोगमुक्त एवं अवरोधी बीजों का प्रयोग करें।

पत्ती का धब्बा रोग : इसके लक्षण छोटे धब्बों के रूप बनते हैं एवं धब्बों को घेरे हुए हल्की वृत्ताकार की आकृति होती है। पत्तियाँ भूरे रंग की होकर सूख जाती हैं।

नियंत्रण : इस रोग के नियंत्रण के लिए डाईफेनोकानाजोल 1 मि.ली./लीटर पानी या थायोफेनेट मिथाईल 1 ग्राम/लीटर पानी के दो छिड़काव दस दिनों के अंतराल पर करना चाहिए।

फराश बीन (फ्रेन्चबीन) की वैज्ञानिक खेती



विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

डा. बिजेन्द्र सिंह

निदेशक

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान

पो.बा. नं. 01, पो. आ.- जखिखनी (शाहशाहपुर), वाराणसी-221 305, उत्तर प्रदेश

दूरभाष- 0542-2635236 / 237 / 247; फैक्स- 0543-229007

ई-मेल: director.iivr@icar.gov.in वेब: www.iivr.org.in

संकलन- एन. राय, ज्योति देवी, हीरालाल, बी.के. सिंह, जयदीप हालदार,

राजशेखर रेड्डी, प्रताप ए. दिवेकर एवं आर.एम. राय

प्रकाशक- डा. बिजेन्द्र सिंह, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भा.स.अनु.सं., वाराणसी

चतुर्थ संस्करण- 5000 प्रतियाँ, जनवरी 2018

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान
जखिखनी (शाहशाहपुर), वाराणसी-221 305, उ.प्र.

फराश बीन (फ्रेन्चबीन) की वैज्ञानिक खेती

दलहनी कुल की सब्जियों में फराश बीन का प्रमुख स्थान है। फराश बीन की खेती भारतवर्ष के सम्पूर्ण मैदानी क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम में व पहाड़ी क्षेत्रों में गर्मियों के मौसम में की जाती है। दक्षिणी भारत में इसकी खेती पूरे वर्ष की जाती है। फराश बीन की हरी फलियों का उपयोग सब्जी के रूप में तथा सूखे दानों का उपयोग दालों के रूप में किया जाता है। इसकी हरी फलियों व सूखे दानों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स कैरोटीन, विटामिन्स व फोलिक अम्ल प्रचुर मात्रा में पाया जाते हैं। भारत में इसकी खेती हिमाचल प्रदेश, जम्मू व काश्मीर, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश तथा पूर्वोत्तर राज्यों में सफलतापूर्वक की जाती है।

जलवायु

फराश बीन (फ्रेन्चबीन) की खेती लगभग सभी प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है। अच्छे जल निकास वाली जिवांसयुक्त बलुई-दोमट से लेकर दोमट मृदा जिसका पी.एच. मान 6-7 के मध्य हो फरास बीन (फ्रेन्चबीन) की खेती के लिए उपयुक्त होती है। जल ठहराव की अवस्था इस फसल के लिए अति हानिकारक होती है।

मृदा

फराशबीन मूलतः गर्म जलवायु की फसल है। अच्छी बढ़वार व उपज के लिए 18-20 डिग्री. सेन्टीग्रेट तापमान उपयुक्त होता है। 16 डिग्री. सेन्टीग्रेट से कम व 22 डिग्री. सेल्शियस से अधिक तापक्रम का फसल की वृद्धि व उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फराशबीन (फ्रेन्चबीन) की फसल पाला व अधिक गर्मी के प्रति संवेदनशील होती है।

प्रमुख किस्में

सीमित बढ़वार वाली (बुश टाइप)

काशी परम : इस किस्म को भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा विकसित किया गया है। पौधे झाड़ीदार (बुश टाइप) हरे रंग के होते हैं। फलियाँ 10-12 सेमी. लम्बी, गोल व गूदेदार तथा गहरे हरे रंग की होती हैं। बुवाई के 60-65 दिन में फलियाँ तुड़ाई योग्य हो जाती हैं। हरी फलियों की औसत उपज 150 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है तथा सूखे दानों (बीज) का उत्पादन 8-10 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

काशी सम्पन्न (वी.आर.एफ.बी.बी.-1): यह केवल सब्जी के लिये उगाने वाली किस्म है जिसका विकास अर्का कोमल तथा कोटेन्डर के संकरण द्वारा हुआ है। इस किस्म के पौधे बौनी किस्म के होते हैं। इस किस्म के खाने योग्य फलियों की तुड़ाई 3-4 बार की जा सकती है। फलियों की तुड़ाई सब्जी के लिए दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से लेकर फरवरी के अंतिम सप्ताह तक की जा सकती है। इस किस्म में तापक्रम 30-32 डिग्री सेन्टीग्रेट पर भी फलत होती रहती है। इस किस्म की औसत उपज 234 कु./हे. हरी फलियाँ हैं। गोल्डेन येलो मौजैक वायरस के प्रतिरोधी किस्म है। इस किस्म के सूखे बीज चाकलेट रंग के चमकीले होते हैं।

काशी राजहंस (बी.आर.एफ.बी.बी.-2): यह भी केवल सब्जी के लिए उगाये जाने वाली किस्म है जो केनेडियम लाइन ई.सी.595960 द्वारा विकसित की गयी है जिनके पौधे बौने किस्म के होते हैं। इस किस्म के पौधों में तापक्रम 30-32 डिग्री सेन्टीग्रेट पर भी फलत होती रहती है। इस किस्म की औसत उपज 210 कु./हे. हरी फलियाँ हैं। इस किस्म के सूखे बीज सफेद रंग के होते हैं।

अर्का कोमल: इसे भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म के पौधे सीधे व झाड़ीदार (बुश टाइप) होते हैं। फलियाँ दूरस्थ स्थानों को भेजने व लम्बे समय तक रखने के लिए उपयुक्त होती हैं। बुवाई के 70-80 दिनों में फलियाँ प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। हरी फलियों की औसत उपज 90 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

अर्का सुविधा : भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर द्वारा इसे ब्लू क्राप व कन्डेण्डर के संकरण उपरान्त वंशावली चयन विधि से विकसित किया गया है। पौधे झाड़ीनुमा होते हैं। फलियाँ सीधी, गोल, गूदेदार व हल्की हरी होती हैं। हरी फलियाँ बुवाई के लगभग 70 दिन बाद तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। हरी फलियों की औसत उपज 190 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

कन्टेन्डर : इस किस्म को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के क्षेत्रीय केन्द्र कटराइन द्वारा विकसित किया गया है। जिसे अमेरिका से प्रवेशित (इन्ट्रोड्यूस) किया गया था। पौधे झाड़ीनुमा तथा फुल गुलाबी रंग के होते हैं। फलियाँ गोल, मुलायम व हरे रंग की होती हैं। बीज का आकार अण्डाकार होता है। फलियाँ बुवाई के 50-55 दिन में तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। फलियों की औसत उपज 80-95 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म मौजैक व चूर्णिल आसिता के प्रति सहिष्णु हैं।

पूसा पार्वती : भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अमेरिकन किस्म वैक्स पाड से एक्स-रे विकिरण द्वारा विकसित किया गया है। पौधे झाड़ीनुमा, फलियाँ गोल व हरे रंग की आकर्षक होती हैं। यह अधिक उपज देने वाली किस्म है तथा पहाड़ों पर उगने के लिए सबसे उपयुक्त है। इसके बीज अण्डाकार होते हैं। बुवाई के 50-60 दिन में फलियाँ प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। हरी फलियों का औसत उत्पादन 80-85 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है। यह मौजैक व चूर्णिल आसिता के प्रति अवरोधी किस्म है।

स्वर्ण प्रिया : इसे उद्यानिकी एवं कृषि वानिकी अनुसंधान कार्यक्रम, राँची द्वारा विकसित किया गया है। पौधे झाड़ीनुमा, फलियाँ गोल, गूदेदार व हरी होती हैं। हरी फलियाँ बुवाई के 50-55 दिन में प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। इस किस्म की हरी फलियों की औसत उपज 120-140 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

पन्त अनुपमा : इसे गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा विकसित किया गया है। पौधे छोटे, झाड़ीनुमा, सीधे बढ़वार वाले होते हैं। फलियाँ चिकनी, मुलायम, गोल व हरे रंग की रेशा रहित हैं। यह कोणीय पर्ण धब्बा (रिंगुलर लीफ स्पॉट) के प्रति रोगरोधी तथा सामान्य बीन मौजैक विषाणु (कामन बीन मौजैक वाइरस) के प्रति सहनशील किस्म है। इस किस्म की हरी फलियों की औसत उपज 90 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

असीमित बढ़वार वाली किस्में (पोल टाइप)

पूसा हेमलता : इसे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के क्षेत्रीय केन्द्र कटराइन द्वारा विकसित किया गया है। पौधे चढ़ने वाले मध्यम ऊँचाई (2.5 मी.) के होते हैं तथा इण्टर नोड (पार्श्व) की लम्बाई कम होती है। फलियाँ मध्यम लम्बी (14 सेमी.), गोल, गूदेदार, रेशारहित तथा हल्के हरे रंग की होती हैं। बुवाई के 60 दिन में हरी फलियाँ प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं।

स्वर्ण लता : इसे उद्यानिकी एवं कृषि वानिकी अनुसंधान कार्यक्रम, राँची द्वारा शुद्ध पंक्ति चयन विधि से विकसित किया गया है। पौधे चढ़ने वाले, फलियाँ गोल, गूदेदार, रेशारहित अच्छी गुणवत्ता वाली होती हैं। फलियाँ बुवाई के 50-60 दिन में प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती हैं। इस किस्म की उपज 100-125 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

खाद एवं उर्वरक

अन्य दलहीनी सब्जियों की आपेक्षा फरास बीन की जड़ों में वायुमण्डल से नत्रजन एकत्रित करने वाली ग्रन्थियों का निर्माण बहुत कम होता है जिसके कारण इस फसल को खाद एवं उर्वरक की आवश्यकता अधिक होती है। अच्छी उपज के लिए 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद खेत की तैयारी के समय मृदा में अच्छी तरह मिला देते हैं। इसके अतिरिक्त 80-120 किग्रा. नत्रजन 50 किग्रा. फास्फोरस तथा 50 किग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर देते हैं। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई से पहले या बुवाई के

समय आधारीय खुराक के रूप में देते हैं। नत्रजन की शेष मात्रा दो बराबर भागों में बाँटकर बुवाई के लगभग 20-25 दिन व 35-40 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में करना चाहिए।

बीज दर एवं उपचार

बौनी (झाड़ीनुमा) किस्मों के लिए 70-80 किग्रा. प्रति हेक्टेयर तथा लता वाली (पोल टाइप) किस्मों के लिए 40-50 किग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। बीज को बुवाई से पूर्व फफूँदनाशी रसायन कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करनी चाहिए। इससे फसल की प्रारम्भिक अवस्था में मृदा जनित बीमारियों से सुरक्षा हो जाती है।

खेत की तैयारी

यदि खेत में नमी की कमी हो तो बुवाई से पूर्व खेत का पलेवा कर लेना चाहिए। बुवाई के पूर्व खेत की अच्छी तरह जुताई व पाटा लगाकर तैयार कर लेना चाहिए। बुवाई के समय बीज अंकुरण के लिए खेत में पर्याप्त नमी होनी आवश्यक है।

बुवाई का समय एवं विधि

उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों में फराश बीन की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय 25 अक्टूबर से 07 नवम्बर तथा तराई क्षेत्रों में फरवरी-मार्च है। पहाड़ी क्षेत्रों में फरास बीन की खेती ग्रीष्म व वर्षा ऋतु में की जाती है। इसके लिए कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में फरवरी-मार्च व अगस्त का महीना, मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में मार्च से जुलाई तथा अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में अप्रैल से जुन का समय सर्वोत्तम होता है।

बीज की बुवाई समतल खेत में या उठी हुई मेड़ों या क्यारियों में की जाती है। उठी हुई मेड़ों या क्यारियों में बुवाई करना पौधों की अच्छी वृद्धि व अधिक उत्पादन के लिए उपयुक्त पाया गया है। झाड़ीनुमा (बुश टाइप) किस्मों के लिए कतार से कतार की दूरी 45-60 सेमी. तथा पौध से पौध की दूरी 10-15 सेमी. रखते हैं। लता वाली (पोल टाइप) किस्मों के लिए कतार से कतार की दूरी 75-100 सेमी. तथा पौध से पौध की दूरी 25-30 सेमी. रखते हैं।

खरपतवार नियंत्रण

फसल की प्रारम्भिक अवस्था में खेत को खरपतवार मुक्त रखने के लिए एक से दो निराई-गुड़ाई पर्याप्त होती है। निराई-गुड़ाई अधिक गहराई तक नहीं करनी चाहिए। वैसे खरपतवार नियंत्रण के लिए पूर्व निर्गमन खरपतवारनाशी रसायनों जैसे पेन्डामेथालीन (स्टाम्प) 3.5 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 48 घंटे के अन्दर छिड़काव करें। इससे 40-45 दिनों तक मौसमी खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है। इसके बाद यदि आवश्यक हो तो एक निराई कर देनी चाहिए।

पौधों को सहारा देना

लता वाली किस्मों को सहारा देना आवश्यक है। सहारा न देने की अवस्था में पौधे भूमि पर ही फैल जाते हैं तथा उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण गुणवत्तायुक्त उत्पादन में भारी गिरावट आ जाती है। सहारा देने के लिए पौधों की कतारों के समानान्तर 2-3 मीटर लम्बे बाँस/लकड़ी/एंगिल आयरन के खम्भों को 5-7 मीटर की दूरी पर गाड़ देते हैं। इन पर रस्सी या लोहे के तार खींचकर ट्रेलिस बनाकर लताओं को चढ़ा देते हैं। पौधों की बढ़वार के अनुसार रस्सी या तार की कतारों की संख्या 30-45 सेमी. के अन्तराल पर बढ़ाते जाते हैं।

सिंचाई प्रबन्धन

फराश बीन की फसल मृदा नमी के प्रति अति संवेदनशील होती है। अतः खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। अपर्याप्त नमी होने पर पौधे मुरझा जाते हैं जिसके कारण उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके लिए मृदा नमी को ध्यान में